❍ 09 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *आपस में सिर्फ ज्ञान की ही बातें की ?*

➢➢ *बाप की याद से विकर्मों का बोझ उतारा ?*

➢➢ *समय के ज्ञान तो स्मृति में रख सब प्रश्नों को समाप्त किया ?*

➢➢ *अनेक आत्माओं की सच्ची सेवा की ?*

────────────────────────

✧ ° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧ ° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

〰✧ *अगर अभी से स्व कल्याण का श्रेष्ठ प्लैन नहीं बनायेंगे तो विश्व सेवा में सकाश नहीं मिल सकेगी।* इसलिए अभी सेवा में सकाश दें, बुद्धियों को परिवर्तन करने की सेवा करो। फिर देखो सफलता आपके सामने स्वयं झुकेगी। *मन्सा-वाचा की शक्ति से विघ्नों का पर्दा हटा दो तो अन्दर कल्याण का दृश्य दिखाई देगा।*

✧ ° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⟡˚˚ ••☆••⟡˚˚ ••☆••⟡˚˚ ••☆••⟡˚˚

⟡˚˚ ••☆••⟡˚˚ ••☆••⟡˚˚ ••☆••⟡˚˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

⟡˚˚ ••☆••⟡˚˚ ••☆••⟡˚˚ ••☆••⟡˚˚

✺ *"मैं सारे चक्र में सबसे साहूकार आत्मा हूँ"*

~✧ सबसे साहूकार से साहूकार कौन है? जो समझते हैं कि सारे चक्र के अन्दर साहूकार से साहूकार हम आत्मा हैं, वो हाथ उठाओ। किसमें साहूकार हो? कितने प्रकार के धन मिले हैं? वो लिस्ट याद रहती है? *बहुत खजाने मिले हैं! एक दिन में कितनी कमाई करते हो, मालूम है? पद्मों की कमाई करते हो। रहते गांव में हो और पद्मों की कमाई कर रहे हो! देखो, यही परमात्मा पिता की कमाल है जो देखने में साधारण लेकिन हैं सबसे साहूकार में साहूकार!*

~✧ तो अखबार में निकालेंगे-यहाँ सबसे साहूकार में साहूकार बैठे हैं। तो फिर सब आपके पीछे आयेंगे। आजकल आतंकवादी साहूकारों के पीछे पड़ते हैं ना। फिर आपके पीछे पड़ जायेंगे तो क्या करेंगे? उन्हों को भी साहूकार बना देंगे ना। *हैं देखो कितने साधारण रूप में, कोई आपको देखकर समझेंगे कि ये सारे विश्व में साहूकार हैं या पद्मों की कमाई करने वाले हैं? लेकिन साधारणता में महानता समाई हुई है। जितने ही साधारण हो उतने ही अन्दर महान् हो! तो यह नशा रहता है-बाप ने क्या से क्या बना दिया और क्या-क्या दे दिया!* दोनों ही बातें याद रहती हैं ना।

~✧ *तो अखबार में निकालेंगे ना-रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड (विश्व में सबसे अधिक धनवान)। और देखो, खजाना भी ऐसा है जिसको न चोर लूट सकता है, न आग जला सकती है, न पानी डुबो सकता है। ऐसा खजाना बाप ने दे दिया।

अविनाशी खजाना है ना। अविनाशी खजाना कोई विनाश कर नहीं सकता। और कितना सहज मिल गया!* जितना खजाना है उसके अन्तर में मेहनत की है कुछ? त्याग किया या भाग्य मिला? त्याग भी किया तो बुराई का किया ना। बुराई छोड़ना भी कोई छोड़ना हुआ क्या? दुनिया कहती है-त्याग किया और आप कहते हो-भाग्य मिला है।

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *समेटने की शक्ति बहुत अपने पास जमा करो।* इसके लिए विशेष अभ्यास चाहिए। अभी-अभी साकारी, अभी-अभी आकारी, अभी-अभी निराकारी। इन तीनों स्टेजेस में स्थित रहना इतना सहज हो जाए।

〰✧ *जैसे साकार रूप में सहज ही स्थित हो जाते हो वैसे आकारी और निराकारी स्थिति भी मेरी स्थिति है, तो अपनी स्थिति में स्थित होना तो सहज होना चाहिए।* जैसे साकार रूप में एक ड्रेस चेन्ज कर दूसरी ड्रेस धारण करते हो ऐसे यह स्वरूप की स्थिति परिवर्तन कर सको साकार स्वरूप की स्मृति को छोड आकारी फरिश्ता स्वरूप बन जाओ।

〰✧ तो *फरिश्ते-पन की डेस सेकण्ड में धारण कर ली। डेस चेन्ज करना नहीं

आता?* ऐसे अभ्यास बहुत समय से चाहिए। तब ऐसे समय पर पास हो जायेंगे।

˳ْ˚ ˚ ••✰••✧˚ ˚ ••✰••✧˚ ˚ ••✰••✧˚ ˚

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

˳ْ˚ ˚ ••✰••✧˚ ˚ ••✰••✧˚ ˚ ••✰••✧˚ ˚

˳ْ˚ ˚ ••✰••✧˚ ˚ ••✰••✧˚ ˚ ••✰••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

˳ْ˚ ˚ ••✰••✧˚ ˚ ••✰••✧˚ ˚ ••✰••✧˚ ˚

〰✧ बापदादा द्वारा सभी बच्चों को कौन सी नम्बरवन श्रीमत मिली हुई है? नम्बरवन श्रीमत है कि 'अपने को आत्मा समझो और आत्मा समझकर बाप को याद करो।' *सिर्फ आत्मा समझने से भी बाप की शक्ति नहीं मिलेगी। याद न ठहरने का कारण ही है कि आत्मा समझकर याद नहीं करते हो। आत्मा के बजाए अपने को साधारण शरीरधारी समझकर याद करते हो। इसलिए याद टिकती नहीं।* वैसे भी कोई दो चीज़ों को जब जोड़ा जाता है तो पहले समान बनाते हैं। ऐसे ही आत्मा समझकर याद करो तो याद सहज हो जायेगी, क्योंकि समान हो गये ना। यह पहली श्रीमत ही प्रैक्टिकल में सदा लाते रहो। यही मुख्य फाउण्डेशन है। अगर फाउण्डेशन कच्चा होगा तो आगे चढ़ती कला नहीं हो सकती।

˳ْ˚ ˚ ••✰••✧˚ ˚ ••✰••✧˚ ˚ ••✰••✧˚ ˚

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- एक शिवबाबा को ही याद करना"*

➳ _ ➳ मै सोभाग्य से सजी आत्मा... अपने संगम के सोभाग्य के नशे में खोयी हुई.उड़ चलती हूँ... और मधुबन घर के पांडव भवन के शांति स्तम्भ पर... और मीठे बाबा के सम्मुख बेठ जाती हूँ... मीठे बाबा से अनवरत आती शक्तियो की किरणों को स्वयं में भरती जा रही हूँ... और मीठे बाबा से दिल की बाते कहती जा रही हूँ... मीठे बाबा भी मेरी यादो में उतावले... अपना परमधाम छोड़ मेरे दिल के करीब मौजूद है.. एक दूजे की यादो में खोये हुए बाबा और मै... एक दूजे की धड़कन की सुन रहे है... *बाबा की धड़कन कह रही है.. मेरे मीठे बच्चे... और मेरा दिल सुना रहा है... मेरे मीठे बाबा.*..

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को ज्ञान रत्नों से निखारते हुए कहते है :-*
"मीठे प्यारे फूल बच्चे... इस पुरानी दुनिया और देह के बन्धनों से बुद्धियोग निकाल कर शिव पिता की यादो में खो जाओ... हर पल, हर साँस मीठे बाबा को याद कर स्वर्ग का राज्य भाग्य अपनी बाँहों में भर लो... ज्ञान रत्नों की झनकार में सदा खोये रहो... *अब जब भगवान ही जीवन में आ गया है... तो किसी भी व्यर्थ में स्वयं को न उलझाओ.*.."

➳ _ ➳ *मै भाग्यशाली आत्मा अपने बाबा से पाये अमूल्य खजाने को निहारती हुई कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... देह के नातो में जो मै आत्मा उलझ गयी थी... आपके प्यार भरे हाथो ने उन गांठो को सुलझा कर मुझे आत्मिक स्वरूप की माला में पिरो दिया है... *आत्मिक प्रेम का पर्याय बनी मै आत्मा हर पल समर्थ चिंतन और आपकी मीठी यादो में मगन हूँ.*.."

❊ *प्यारे बाबा मुझ आत्मा पर ज्ञान धारा को प्रवाहित करते हुए कहते है :-* "मीठे लाडले बच्चे... शिवबाबा की यादो भरा यह खुबसूरत वरदानी साथ मीठे भाग्य की बलिहारी है... इस समय को अब किसी भी व्यर्थ में न खपाओ... *ईश्वर पिता के साये में, गुणो और मूल्यों से सज संवर कर, देवता बन जाओ..*."

➽ _ ➽ *मै आत्मा अपने प्यारे बाबा के ज्ञान दौलत की वारिस बनकर मुस्कराते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मनमीत बाबा... आपके सच्चे प्रेम ने मुझ आत्मा का कायाकल्प किया है... आपके प्यार ने मेरे दुर्गुणों को भस्म कर, मुझे अमूल्य रत्नों और गुणो की दौलत से भरपूर किया है... मै आत्मा, *ज्ञान बुलबुल बनकर इस विश्व बगिया में चहक रही हूँ.*.."

❊ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को अपने वरदानों से सराबोर करते हुए कहते है ;-* "मीठे सिकीलधे बच्चे... जिस ईश्वर पिता की जनमो से चाहना थी... *जब वो मिल गया है, तो साँस का हर तार, उसकी यादो में पिरो दो.*.. और सदा ज्ञान रत्नों की खनक में खोये रहो... जो भी सम्मुख आये उनको भी ज्ञान सुनाकर आप समान भाग्यवान बनाओ... यह दौलत हर दिल पर खूब लुटाओ..."

➽ _ ➽ *मै आत्मा अपने मीठे भाग्य के नशे में डूबकर बाबा से कहती हूँ :-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... कब सोचा था कि पत्थर की प्रतिमा से भगवान निकल कर यूँ सजीव हो उठेगा... पिता बनकर मुझे यूँ गोद में बिठाएगा... और टीचर बन ज्ञान रत्नों से मेरी झोलियाँ भरेगा.., सतगुरु बन सदगति करेगा... *मेरे भाग्य ने यह कितना खुबसूरत दिन मुझे दिखलाया है*..." मीठे बाबा का दिल से शुक्रिया कर... मै आत्मा अपने कार्य जगत में आ गयी...

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✷ *"ड्रिल :- मम्मा बाबा को पूरा फॉलो कर ऊंच पद का अधिकार लेना है*"

➽ _ ➽ मम्मा बाबा ने शिव बाबा की श्रेष्ठ मत पर चल कर जो श्रेष्ठ कर्म किये उन श्रेष्ठ कर्मो का एक एक यादगार उनकी कर्मभूमि मधुबन में स्पष्ट दिखाई देता है। इसलिए मम्मा बाबा को फॉलो करने का दृढ़ संकल्प लेते ही मन बुद्धि सहज ही परमात्मा की उस अवतरण भूमि मधुबन में पहुंच जाते हैं और मम्मा बाबा की साकार यादें बुद्धि में सहज ही स्पष्ट हो जाती हैं। *ऐसे ही मम्मा बाबा की साकार यादों का अनुभव करते करते मैं मन बुद्धि से पहुंच जाती हूँ उस स्थान पर जहां मम्मा बाबा ज्ञान योग से अपने हर ब्राह्मण बच्चे की पालना करते थे*।

➽ _ ➽ मैं देख रही हूं स्वयं को उस क्लासरूम में जहां मम्मा बाबा आ कर मुरली चलाते थे। मम्मा बाबा के ममतामई, स्नेही और मधुर महावाक्यों को सुनने के लिए अनेक ब्राह्मण आत्मायें यहां उपस्थित हैं। *सामने संदली पर ममता की साक्षात मूर्त मम्मा और प्रेम तथा वात्सलय की प्रतिमूर्ति ब्रह्मा बाबा विराजमान है। दोनों के चेहरे पर दिव्य नूर और दृष्टि में रूहानी कशिश सबको अपनी ओर आकर्षित कर रही है*। मुख से ओम ध्वनि का उच्चारण करती, सितार पर बड़ी तन्मयता के साथ दिव्य गीत गाती मम्मा की मधुर आवाज सुनने वाली हर ब्राह्मण आत्मा के हृदय के तारों को झंकारित कर रही है।

➽ _ ➽ ऐसा लग रहा है जैसे सभी ब्राह्मण आत्मायें देह से ऊपर उठ कर मुक्त पंछी के समान रूहानियत के आकाश में विचरण कर रही हैं। *मम्मा बाबा के मुख से मधुर वाणी सुनने के बाद अब एक एक करके सभी ब्राह्मण बच्चे मम्मा बाबा की ममतामयी गोद में बैठ अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर रहें हैं*। मम्मा बाबा ज्ञान की लोरी दे कर सबको अपने वात्सलय का अनुभव करवा रहें हैं। मेरी बारी आने पर मैं जैसे ही मम्मा बाबा की गोद मे बैठती हूँ *ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे शरीर है ही नही बस थोड़ी चेतनता है किंतु अहसास नही है कि शरीर कहाँ है*। बहुत ही हल्केपन और स्वयं को असीम शक्ति से मैं भरपूर अनुभव कर रही हूं।

➽ ➽ मुरली क्लास के बाद अब मम्मा बाबा सभी बच्चों को सैर पर ले

जा रहें हैं। ब्रह्मा बाबा चलते चलते बीच बीच मे खड़े हो कर बच्चों से पूछ रहे हैं:- " शिव बाबा याद है"। सभी बच्चे बारी बारी से बाबा का हाथ पकड़ कर खुशी से सैर कर रहें हैं। खुली जगह पर बैठ सभी चाय पी रहें हैं। *बीच बीच मे बाबा ज्ञान की बातें बच्चों को समझा रहें हैं और ज्ञान सुनाते सुनाते कभी अपने अनादि स्वरूप में तो कभी अपने आदि स्वरूप में स्थित होने ड्रिल भी करवा रहें हैं*। मैं देख रही हूं ड्रिल करते करते कई ब्राह्मण आत्मायें ट्रांस में पहुंच कर बाबा को श्रीकृष्ण के बाल रूप में देख गोपी बन उनके साथ रास करने में खोई हुई हैं।

➽ _ ➽ साकार मम्मा बाबा के साथ के इन अनमोल क्षणों का भरपूर आनन्द ले कर अब मैं ब्राह्मण आत्मा अपने सेवा स्थल पर लौट रही हूँ। *मन मे अब केवल एक ही संकल्प है मात पिता को फॉलो कर, मम्मा बाबा के समान सबकी ज्ञान योग से पालना कर सबको आप समान बनाना*। इस संकल्प को पूरा करने के लिए अब मैं अपने हर संकल्प, बोल और कर्म पर विशेष अटेंशन दे कर हर कर्म करने से पहले चेक कर रही हूं कि क्या वो मम्मा बाबा के समान है। मम्मा बाबा की शिक्षाओं को जीवन मे धारण कर सम्पूर्णता के लक्ष्य को पाने का तीव्र पुरुषार्थ करते हुए अब मैं *मम्मा बाबा के समान स्नेह और शक्तिरूप बन ईश्वरीय यज्ञ में अपने तन-मन-धन को सफल कर रही हूं*।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं शुभचिंतक आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा अनेक आत्माओं की सच्ची सेवा करती हूँ ।*
✺ *मैं निष्काम सेवाधारी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं समय के ज्ञान को स्मृति में रखने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सब प्रश्नों को समाप्त करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं स्वदर्शन चक्रधारी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ कई बच्चे बड़े होशियार हैं। अपने पुराने लोक की लाज भी रखने चाहते और ब्राह्मण लोक में भी श्रेष्ठ बनना चाहते हैं। *बापदादा कहते लौकिक कुल की लोकलाज भल निभाओ उसकी मना नहीं है लेकिन धर्म कर्म को छोड़ करके लोकलाज रखना, यह रांग है। और फिर होशियारी क्या करते हैं? समझते हैं किसको क्या पता? - बाप तो कहते ही हैं - कि मैं जानी जाननहार नहीं हूँ। निमित्त आत्माओं को भी क्या पता? ऐसे तो चलता है। और चल करके मधुबन में पहुँच भी जाते हैं।* सेवाकेन्द्रों पर भी अपने आपको छिपाकर सेवा में नामीग्रामी भी बन जाते हैं। जरा सा सहयोग देकर सहयोग के आधार पर बहुत अच्छे सेवाधारी का टाइटल भी खरीद कर लेते हैं। *लेकिन जन्म-जन्म का श्रेष्ठ टाइटल सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी... यह अविनाशी टाइटल गंवा देते हैं। तो यह सहयोग दिया नहीं लेकिन "अन्दर एक, बाहर दूसरा" इस धोखे द्वारा बोझ उठाया।*

➳ _ ➳ *सहयोगी आत्मा के बजाए बोझ उठाने वाले बन गये। कितना भी होशियारी से स्वयं को चलाओ लेकिन यह होशियारी का चलाना, चलाना नहीं लेकिन चिल्लाना है।* ऐसे नहीं समझना यह सेवाकेन्द्र कोई निमित्त आत्माओं के स्थान हैं। *आत्माओं को तो चला लेते लेकिन परमात्मा के आगे एक का लाख गुणा हिसाब हर आत्मा के कर्म के खाते में जमा हो ही जाता है।* उस खाते को चला नहीं सकते। इसलिए बापदादा को ऐसे होशियार बच्चों पर भी तरस पड़ता है। फिर भी एक बार बाप कहा तो बाप भी बच्चों के कल्याण के लिए सदा शिक्षा देते ही रहेंगे। *तो ऐसे होशियार मत बनना। सदा ब्राह्मण लोक की लाज रखना।*

✺ *"ड्रिल :- "अन्दर एक, बाहर दूसरा" - इस धोखे द्वारा बोझ नहीं उठाना।"*

➳ _ ➳ *इस दुनियावी समुन्दर के बीच देह रूपी सीप के अन्दर मैं आत्मा रूपी मोती चमक रही हूँ...* कई जन्मों से अपने असली गुणों को भूलकर मैं आत्मा मोती इस देह रूपी सीप के अन्दर दबकर रह गई थी... दूर गगन से ज्ञान सूर्य की किरणें मुझ पर पड़ रही हैं... *ज्ञान सूर्य की किरणों से देह रूपी सीप का आवरण टूट रहा है... देह रूपी सीप के आवरण को तोड़ मैं आत्मा रूपी मोती बाहर निकलती हूँ... पंच तत्वों की दुनिया से ऊपर उड रही हूँ...* आकाश तत्व से भी पार और ऊपर उडती हुई पहुँच जाती हूँ अपने परमपिता के पास परमधाम...

➳ _ ➳ *परमधाम में मैं आत्मा अपने स्व स्वरूप बिंदु रूप में चमक रही हूँ... अपने पिता की बाँहों में लिपट जाती हूँ...* मेरे शिव पिता से निकलती दिव्य सतरंगी किरणों से मुझ आत्मा के सारे विकार काले धुंए के रूप में बाहर निकल रहे हैं... मैं आत्मा निर्विकारी बन रही हूँ... जन्म-जन्मान्तर के सभी अवगुण भस्म हो रहे हैं... रंग-बिरंगी किरणें एक-एक गुण के रूप में मुझ आत्मा में समा रहे हैं... मैं आत्मा अपने असली गुणों को धारण कर रही हूँ... सर्व गुण सम्पन्न बन रही हूँ... सभी कमी-कमजोरियां, पुराने आलस्य-अलबेलेपन के संस्कार समाप्त हो रहे हैं... *मैं आत्मा शक्तियों को धारण कर शक्ति स्वरूप बन रही हूँ... मैं कलाविहीन आत्मा अब 16 कलाओं से सम्पन्न बन गई हूँ...*

↖

➳ _ ➳ मैं आत्मा जन्म-जन्म के श्रेष्ठ अविनाशी टाइटल से श्रृंगार कर नीचे अपने देह में अवतरित होती हूँ... मैं आत्मा सदैव अपने दिव्य गुणों, शक्तियों की स्मृति में रहकर हर कर्म कर रही हूँ... हर कर्म को बाबा की सेवा समझ कर रही हूँ... करावनहार करा रहा है मैं आत्मा निमित्त करनहार कर रही हूँ... *मैं आत्मा ब्राह्मण कुल की मर्यादाओं, धर्म, कर्म का पालन करते हुए लौकिक कुल की लोकलाज को निभा रही हूँ... मैं आत्मा ऐसा कोई भी कर्म नहीं करती हूँ जिससे ब्राह्मण कुल कलंकित हो... सदा ब्राह्मण लोक की लाज का ध्यान रखते हुए हर कर्म को करती हूँ... कभी भी डिस सर्विस नहीं करती हूँ...*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा अन्दर और बाहर एक समान रहती हूँ... "अन्दर एक, बाहर दूसरा" इस धोखे द्वारा बोझ नहीं उठाती हूँ...* सहयोगी आत्मा बन सर्व का सहयोग करती हूँ... पुराने लोक की लाज रखने कोई भी होशियारी नहीं दिखाती हूँ... कर्म का खाता नहीं बढ़ाती हूँ... बाप से, निमित्त आत्माओं से सच्चाई और सफाई से रहती हूँ... सच्चा-सच्चा ब्राह्मण बन, ब्राह्मण धर्म को धारण कर कर्म में लाती हूँ... बाबा की शिक्षाओं को धारण कर आचरण और व्यवहार में लाती हूँ... *सदा अपने को बाबा के बगीचे का रूहानी पुष्प समझ अपने कर्तव्यों को निभाती हूँ... फिर से काँटों को धारण नहीं करती हूँ... सदा आत्मिक दृष्टि, वृत्ति रख लौकिक और अलौकिक का बैलेंस रखती हूँ... अल्पकाल के विनाशी टाइटल के पीछे अपना अविनाशी टाइटल नहीं गंवाती हूँ...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔